अध्याय : 6

काव्य-शिल्प

अध्याय : 6

काव्य-शिल्प

काव्य-शिल्प का परिचय

आधुनिक काल अनेक दृष्टियों से सजग एवं क्रांतिकारी युग है। इस काल में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नये अन्वेषण हुए हैं। साहित्य भी इस दृष्टि से अछूता नहीं रहा है। विषय और रूप-शिल्प की दृष्टि से वह विविधताओं से भरा पड़ा है। गद्य और पद्य दोनों प्रकार के साहित्य में यह युग नाना प्रकार की नवीनताओं का जनक है। काव्य-शिल्प की दृष्टि से भी इसे क्रांतिकारी युग कहा जा सकता है।

ये तो मनुष्य की सौन्दर्य-चेतना प्राचीन काल से ही परिवर्तित-विकसित होती आ रही है किन्तु इस युग में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली उपलब्धियों एवं देश तथा विश्व स्तर पर होने वाली प्रभावशाली घटनाओं ने उसे नया संस्कार और मानसिकता दी है। साहित्य में यह घटना और भी गहराई से घटी। जिन्दगी और भावबोध जटिल होते चले गए। परिणामतः रचना की अभिव्यक्ति भी जटिल हो उठी। सर्जक को अभिव्यक्ति के प्रचलित उपादान घिसे हुए और अक्षम नजर आने लगे। उनके प्रति सौन्दर्याभिरूचि से सम्पन्न कवि का नकारात्मक स्वर उभरने लगा। वस्तुतः उसकी मूल समस्या अपने-आप को सम्प्रेषित करने की रही। सम्प्रेषण की समस्या के अनुपात में ही अभिव्यक्ति के माध्यमों की खोज भी बढती गयी। "नई कविता" के जमाने में इस खोज का चरम रूप नज़र आता है। नये कवि ने प्रयोग को भी खोज का माध्यम बनाया। वह शिल्प के नये-नये प्रयोगों के माध्यम से सम्प्रेषण की समस्या का हल ढूँढने लगा। नये कवि का तर्क था कि युगीन परिस्थितियों और जटिल भावबोध को सम्प्रेष्य बनाने के लिए

उसकी कविता ने सहज ही नवीन शिल्प-विधान को अपनाया है। वह शिल्प के पुराने पड़ गए उपादानों को छोड़ने पर विवश है। नया कवि अपनी रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट करने के साथ-साथ अपने शिल्प और रूप के प्रयोगों को न्याय-संगत सिद्ध करने लगा।[1]

"शिल्प के प्रति भिन्नता और विचित्रता का आग्रह नई कविता में पाया जाता है। लेकिन यह विचित्रता सभी कवियों में नहीं किन्तु कुछ में अपनी सीमापार है। रघुवीर सहाय ने शाब्दिक चमत्कारों की नयी संगति नयी कविता में उपयुक्त मानी है। कवि अपने शब्दों के अनुक्रम में एक क्रम खोजता हुआ असंगति में भी संगति की आशा करता है। शिल्प की विचित्रता के उदाहरण जितने अधिक अंग्रेजी साहित्य में मिलते हैं उतने हिन्दी में नहीं। मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक है जिस ओर क्षणिक विशेषणों से भी कविता को विभुषित किया है।"[2]

नई कविता में प्रारंभ से ही दो प्रकार की प्रवृत्तियों का पल्लवन हुआ था। एक तो सामाजिक बोध के यथार्थ पर आधारित थी, दूसरी अनास्था, अस्वीकार, अविश्वास आदि से प्रेरित और मनोग्रंथियों से संप्रेषित व्यक्तिवादी दृष्टि पर केंद्रित थी। इस व्यक्तिवादी दृष्टि ने ही नयी कविता में कथन की अनेक शैलियों को जन्म दिया है। प्रतीक, प्रभाव, चित्र आदि की जो प्रधानता नई कविता में मिलती है। वह इसी व्यक्तिवादी दृष्टिकोन का परिणाम है। रघुवीर सहाय "स्वान्त सुखाय" और "बहुजन हिताय" काव्य रचना के सिद्धान्तों में समचयन की बात करते हैं।

भाषा वह सेतू है जिससे एक व्यक्ति का सत्य दूसरों तक पहुँचता है। जब तक कवि की भाषा इस सेतुत्व गुण से युक्त रहती है, तब तक वह सार्थक और अपरिहार्य प्रतीत होती है। काव्य-शिल्प के उपादानों में प्राथमिक उपकरण भाषा है। भाषा अभिव्यक्ति की प्राण शक्ति का दूसरा नाम है। रघुवीर सहायजी की भाषा नयी कविता की भाषा है। उसमें सरलता, सादगी होते हुए भी विशिष्टता है। नए शब्दों की ध्वन्यात्मकता और लयात्मकता को भी यथासंभव सुरक्षित रखा है।

रघुवीर सहाय प्रगतिशील चेतना के वाहक, जन चेतना के पक्षधर निम्नवर्गीय व्यक्तियों के प्रति करूणाशील, उदार, मानवता वाद के पोषक स्वस्थ प्रेम के व्याख्याता, प्रखर व्यंग्यकार, जीवन के प्रति आस्थावान होने के कारण सच्चे प्रगतिशील सर्जनात्मक क्रांति के सार्थवाह, मानवता के प्रतिष्ठापक है। रघुवीर सहाय जन-कवि थे, जीवन की संगत-असंगत स्थितियों के दिग्दर्शक कवि थे। वे अपनी पीढ़ी से काफी आगे सोचते थे। उनकी अनुभूतियों का कॅमेरा विघटित समाज की उन भावी तस्वीरों के स्नैप्स भी ले आया है। जो उनके बाद समाज में उभरी है। यह वह कवि था जो मूल्यहीनता, अमर्यादा , असंयम और मानवीय आदर्शों के तत्व उनमें पाए जाते हैं।

रघुवीर सहाय की कविता सीधी-सादी और अलंकृत ग्रामबाला है जिसे अपने शृंगार-प्रसाधन की तनिक भी चिंता नहीं है। कारण प्रगत्युन्मुखी चेतना के कवि होने के कारण उनका ध्यान प्रमुख विशेषों पर ही अधिक केंद्रित रहा है। ऐसी स्थिति में उनका काव्य भाव और विषय-वैविध्य की यथार्थता को अधिक निरूपित करता है।

प्रकृति की सुषमासिक्त छबियों के अंकन में सौन्दर्य की मारक अभिव्यक्तियों में और प्रेमजनित भावानुभूति की व्यंजना में रघुवीर सहाय का शिल्प अपेक्षाकृत आकर्षक और अभिजात्यपूर्व हो गया है। उनकी भाषा भावानुगामी और सीधी सरल है। अधिकांशतः उनके शब्दों का मिजाज और स्वरूप सरल है। वे भावों के मध्य तनकर कहीं भी खड़े नहीं हुए हैं। हाँ कभी यदि उनका संस्कृत ज्ञान सृजन क्षणों के मध्य आ ही गया तो गाहें-बगाहें शब्दावली को उपकृत करने में रघुवीर ने संकोच नहीं किया है।

हिन्दी स्वातंत्र्योत्तर काल से कविता ने शिल्प के सम्बन्ध में एक और प्राचीन के प्रति विद्रोह किया है और दूसरी ओर नये-नये प्रयोगों को अपनाया है। अतिरंजना, अलंकरण, रूढ, प्रतीक-योजना, काव्योत्तर तत्वों के संमिश्रण से अपने को मुक्त करने की चेष्टा की है। प्रस्तुत-अप्रस्तुत का परंपरागत विभाजन भी आज लुप्त होता जा

रहा है। कवि आज व्यक्त जगत की किसी वस्तु विषय का किसी अन्य वस्तु के माध्यम से वर्णन नहीं करता, वह वस्तु जगत् से गृहित अनुभव को उसके संश्लिष्ट रूप में प्रस्तुत करता है। आज के नये कवि ने भाषागत प्रयोगों की एकांत वैयक्तिक लीकों से बचते हुए उसकी व्यंजना शक्ति को समर्थ बनाया है। समग्र जीवन-क्षेत्रों से शब्द चयन किया है। लोक जीवन से शब्दों का चुनाव करते हुए भाषा को सहज सुथरा और अर्थ-गर्भ बनाने की चेष्टा की है।

भाषा में सही शब्दों का चुनाव साधारण शब्द से बड़ी बात कहने की प्रवृत्ति, प्रतीकों में बोलने की आदत, साधारण से साधारण और दैनिक जीवन के क्षेत्र से प्रतीकों का चयन तथा सांस्कृतिक और पौराणिक संदर्भों में नया भाव भरने की प्रवृत्ति, उपमानों की नव्यता, विश्वसनीय और सही उपनामों से भाव को संप्रेषित करने की प्रवृत्ति, कथन की नयी भंगिमाओं से सीधा प्रहार करने वाली शैली, प्रतिकात्मक, बिंबात्मक, व्यंग्यात्मक और संपर्कात्मक शैली तक का विकास हुआ है। प्रतीकों और बिम्बों में नयी यथार्थ भावनाओं को प्रकट करना, आधुनिक बोध का ही परिचायक है।

वस्तु-चेतना और काव्य-शिल्प

नए कवियों में शिल्प-विधान की प्रौढता की दृष्टि से रघुवीर सहाय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रघुवीर का भाव और विचार पक्ष की तरह कला और शिल्प पक्ष भी विकासशील है। कवि ने वस्तु पक्ष की महत्ता स्वीकार करते हुए, उसके शैली एवं शिल्प पक्ष को अधिक महत्व दिया है। वे काव्य के विषय से अधिक टेकनीक को महत्व देते हैं। रघुवीर के विचार इस प्रकार हैं - "कविता में विषय से अधिक टेकनीक पर ध्यान दिया है। विषय की मौलिकता का पक्षपाती होते हुए भी मेरा विश्वास है कि टेकनीक के अभाव में कविता अधुरी रह जाती है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि रघुवीरजी ने अपने काव्य की यथार्थ विषय वस्तु के साथ-साथ समर्थ टेकनीक के प्रति पूर्णतः जागरूक है।

"रघुवीर सहाय के मत में अनुभूति केवल "पर्यवेक्षण" नहीं होती। वह तो वास्तविकताओं के अर्थ से रचनाकार के मन के तादात्म्य की स्थिति है जो रागात्मक होती है।"[3]

रघुवीर सहाय के अनुसार अनुभूति की गहराई या परिपक्वता वहाँ नजर आती है जहाँ कविता वस्तुओं को छूकर नहीं उनके अन्दर से निकलती है।[4]

रघुवीर सहाय के विचार है "सही-सही अर्थ में प्रयोगवाद शायद ही हिन्दी का कोई कवि या लेखक हो, शायद ही कोई लेखक रचनाशैली में नये-नये प्रयोग करने में ही अपनी कला की सार्थकता पाने में लगा हो और उसने विचार-वस्तु और शैली के परस्परावलंबित सम्बन्ध को झूठा करार दिया हो, तो वे प्रकारान्तर से विचार-वस्तु और शैली के परस्परावलम्बित रूप को स्वीकार कर रहे होते हैं। इस बात की पुष्टि उनके इस कथन से भी हो जाती है - "उधर लेखक को यह अनुभव करना चाहिए कि शैली में किया हुआ कोई भी प्रयोग विचार-वस्तु के दिलोदिमाग में उतरने के तरीके पर निर्भर रहेगा। किन्तु उनके मंतव्य को सही ढंग से समझने में दिक्कत तब होती है जब एक ओर वे कविता को जानदार बनाने के लिए अनुभति को सुधारने पर बल देते हैं। तथा दूसरी ओर कविता में शिल्प को सर्वोच्च मानते हुए यह कहते हैं - "जहाँ आपको सबसे कम शिल्प दिखायी देता है वहाँ भी शिल्प ही के कारण वह सबसे कम लगता है।"[5]

रघुवीर सहाय की कविता का शिल्प-विधान

साठोत्तरी कवियों में शिल्प-विधान की प्रौढता की दृष्टि से रघुवीर सहाय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रघुवीर सहाय ने भाव और विचार पक्ष की तरह कला और शिल्प पक्ष का भी विकास किया है। रघुवीरजी ने वस्तुपक्ष की महत्ता स्वीकार करते हुए उसके शैली एवं शिल्प पक्ष को अधिक महत्व दिया है। वे काव्य में विषय से अधिक टेकनीक को महत्व देते हैं। कवि रघुवीर सहाय अपने काव्य की यथार्थ वस्तु के साथ-साथ समर्थ टेकनीक के प्रति पूर्णतः जागरूक है।

भाषा-शिल्प

रघुवीर सहाय की कुछ कविताओं में "अकाल", "नयी हँसी", "अधिनायक" आदि में बड़ा पेना व्यंग्य है। रघुवीर सहाय कहीं-कहीं इसी कारण गंभीर रचना में "शरारतें" या "गैर जिम्मेदाराना हरकते" भी करते हैं। जिससे व्यंग्य और तीखा हो जाता है, विसंगति के संगति और निरर्थकता में अर्थ दिखाई पड़ने लगता है। कवि की यह विशेषता अद्‌भूत है। "लोगों को उनकी तोंद से जानता हूँ", "जीवनदानी गोंददानी" आदि प्रयोग सार्थक और व्यंजना गर्भित हैं। इसी प्रकार मेरे शब्द एक लहीरयता गाना बनकर उकठू बैठे लोगों पर मिनमिनाने लगे। "यहाँ मिनमिनाने लगे" का प्रयोग वर्तमान समाज के "बासीपन खालीपन और दैन्य जनता" को उभार देता है। इस प्रकार कवि ने व्यंजना का सार्थक प्रयोग किया है।

कवि की भाषा और शिल्प प्रौढ है। भाषा को कविने हर कोने, हर परिवेश से लिया है। आम बोलचाल की भाषा का इतना सक्षम, सार्थक और प्रभावशाली प्रयोग कवि की विशेषता है। "कुकूँआते, पिंपयाता, दो हत्थड आदि के प्रयोगों के अतिरिक्त कवि ने जीवन सच्चाईयों की खोज करने वाले कुछ नए शब्द प्रयोग भी किए हैं। यह प्रयोग किसी विशेष भावदशा से सम्बन्धित हैं। जो स्थिति को अधिक सजीव रूप से स्पष्ट करते हैं। यह कहने वाला कवि -

"वापस ले जाओ मुझे एक बार उस दिन
जब मैंने कहा था कि भाषा को
मंदिर में बन्द मत करो
उसे बोलो।"[6]

भाषा का आदर्श उसके जीवित उपयोग में मानता है। इसीलिए इनकी भाषा में "चौक बाजार का सुथरापन और खानगी" है। भाषा एक समर्थ माध्यम है, जिसमें हम साँस ले सकें, जिसमें अपना मत दे सकें, जिसमें अपने स्वाधीन निर्णय ले सकें और सबसे पहले जी सकें। इसको स्पष्ट करते कवि ने इस प्रकार की भाषा को अपनाया है -

"इसलिए -
कोई और कोई और कोई और-और अब भाषा नहीं
शब्द, अब भी चाहता हूँ
पर वह कि जो आए वहाँ वहाँ होता हुआ
तुम तक पहुँचे
चीजों के आर पार दो अर्थ मिलाकर सिर्फ एक
स्वछन्द अर्थ दे। मुझे दे।"[7]

रघुवीर सहाय की कविताएँ वस्तुतः आत्महत्यापूर्ण वातावरण में "आत्महत्या के विरूद्ध" स्वर को प्रस्तुत करती है। ये कविताएँ "उमस भरे दमघोट" वातावरण में हवा के झोंके के समान हैं।

"रघुवीर सहाय की भाषा में कबीर जैसी सहजता के साथ अभिव्यक्ति का मार्मिक तीखापन और बातें लोहिया जैसी सच्चाई और खरेपन की यह कविताएँ बीस वर्ष के प्रजा तंत्र के सारे खोखलेपन को खोलकर रख देती है।"[8]

अभिव्यक्ति की दृष्टि से यदि समग्रतापूर्वक ध्यान दिया जाय तो रघुवीर सहाय का शिल्प-विधान सार्थक शब्दों को लेकर चला है। उन्होंने अधिकांशतः कविता में नाटकीय एकालाप की शैली को अपनाया है, जिसे हिन्दी कविता का एक प्रयोग माना जा सकता है। कवि कहता है -

"एक गरीबी, उबी, पीली, रोशनी, बीबी
रोशनी धुंध उजाला, यमन हरमुनियम अदृश्य
डब्बा बंद शोर
गाती गलाभीच आकाशवाणी
अंत में टडंग।"[9]

इन पंक्तियों में कवि ने एक साथ हल्की-फुल्की बात कहकर युग की विसंगति को सरल शब्दों का प्रयोग करके मूर्तिमान कर दिया है।

कवि रघुवीर सहाय ने भाषा का अच्छा प्रयोग किया है, किन्तु कहीं-कहीं पर उसने अपनी विलक्षण स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति के कारण खड़ी बोली के व्याकरण-सम्मत रूप की अवहेलना की है। कवि रघुवीर सहाय की निम्न पंक्तियाँ देखिए -

"शक्ति दो बल दो हे पिता
जब दुख के भार से मन थकने आय
पैरों में कुली की सी लपकती चाल छटपटाय

× × × ×

तुम से मिला है जो विक्षत जीवन का हमें दाय
उसे क्या करें ?
तुमने जोरी है अनाहत जिजीविषा
उसे क्या करें ? कहीं अपने पुत्रों, मेरे छोटे
भाइयों के लिए यही कहो।"[10]

यहाँ "थकने आय" व्याकरण की दृष्टि से चिन्त्य हैं, तथा संदर्भापेक्षा की दृष्टि से "विक्षत" तथा "जिजीविषा" शब्दों का अर्थ-गांम्भीर्य विचारणीय है। कहीं-कहीं उनके खड़ी बोली के बजाय भाषा का प्रयोग बंगला के अनुसार किया है। कवि रघुवीर सहाय ने भाषा में नवीन प्रयोग की हटवादिता से अपनी कविता की भाषा में भूगोल, विज्ञान, दर्शन, मनोविश्लेषण एवं बाजारू बोली के शब्दों का प्रयोग करने में संकोच नहीं किया है। कहीं-कहीं पर जान-बूझकर शब्दों का रूप तोड़ा-मरोड़ा है जो कि समीचीन नहीं है। "भाषा, भाव, शैली और छन्द आदि के क्षेत्र में सुरुचि-सम्पन्नता के स्थान पर अनपेक्षित विलक्षणता को प्रश्रय देने के कारण रघुवीर सहाय की कविता का अपना ढाँचा भी आधुनिक सांस्कृतिक ढाँचे के समान चरमरा उठा है।"[11]

रघुवीर सहाय के काव्य में वैसे तो प्रायः शुद्ध, साहित्यिक एवं परिनिष्ठित खड़ी बोली हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है, किन्तु उनकी इस भाषा में विविधता

के दर्शन होते हैं। कवि ने कहीं-कहीं शुद्ध, संस्कृत-निष्ठ, अभिजात तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे वनस्थली, दुरन्त, सृजन, सृष्टि, उर्ध्वग, उत्तप्त, गाय, अपराजिता, प्राणाकाश, जिजीविषा, नीरन्ध्र आदि।"

ऐसे ही कवि ने अपनी अभिव्यंजना को अधिकाधिक सर्वजनसुलभ बनाने के लिए कहीं-कहीं देशज, ग्राम्य एवं बोलचाल में प्रयुक्त शब्दों को अपनाया है। जैसे कलस, नोंकी, आडी, जोखम, आलते, गलियारे, ओट, पालागन, सीढी, ढोकरा आदि।

रघुवीर सहाय ने बोलचाल में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के शब्दों को भी यथास्थान अपनाकर अपनी भाषा को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है। इसीलिए कवि ने कितने ही अंग्रेजी के लोकप्रचलित शब्दों को अपनी भाषा में स्थान दिया है। जैसे कलैण्डर, फ्रेम, पार्क आदि।

डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना के मतानुसार - "कवि ने भाषा को भावों एवं विचार के अनुकूल ढालने के लिए विविध प्रकार के शब्दों से अलंकृत एवं सुसज्जित किया है। परन्तु कवि की शब्दावली में अप्रचलित एवं दुरूह पदावली का प्रयोग होने कारण कविता भी अस्वाभाविक एवं दुरूह जान पडती है।"[12]

वास्तव में भाषा के क्षेत्र मे रघुवीर सहाय का अपूर्व योगदान है। यहाँ तक की भाषा समृद्धि के लिए नये-नये शब्दों की निर्मिती, अन्य भाषाओं से शब्दों का उदारतापूर्वक स्वीकरण, प्रचलित शब्दों का पुनःसंस्कार, शब्दों के नये संदर्भ प्रयोग भी कवि ने स्वीकारे हैं। इससे जहाँ एक ओर भाषा में भदेसपन और अनगढ़ता आयी, वही दूसरी ओर एक नया कीर्तिमान भी स्थापित हुआ। फिर भी इसे भुलाया नहीं जा सकता है कि इससे रघुवीर सहाय की कविता भाषा दुर्बोधता का शिकार हुई है। यह यथार्थ है कि नयी कविता को भाषा-संक्रांति के कठिनतम दौर से गुजरना पड़ा है। परन्तु कवि की भाषिक भंगिमाओं को देखकर बड़ी आसानी से कहा जा सकता है कि उनकी उपलब्धियाँ निश्चय ही महत्वपूर्ण है।

प्रतीक विधान

"वस्तुतः प्रतीक शब्द के कई अर्थ माने जाते हैं और शब्द मात्र ही प्रतीक है तथा भाषा का प्रयोग ही प्रतीकात्मक है। लेकिन साहित्य जगत् में प्रतीक कुछ विशिष्ट अर्थ रखता है। जब किसी शब्द के प्रचलित अभिधेय अर्थ को ग्रहण करते हुए भी उसके द्वारा किसी अन्य अर्थ की सूचना दी जाय तब उसे प्रतीक कहा जाता है। उदा॰सिंह-साहस और शौर्य का, साँप-क्रूरता और कुटिता तथा भेड कायरता और भीरूता का प्रतीक माना जाता है।"[13]

प्रतीक जीवन में व्यवहार के लिए अत्यंत आवश्यक है। वस्तुतः मनुष्यमात्र का स्वभाव है कि वह अपने भाव के अतिरेक को बाहर प्रकट करने के लिए लालीयत रहता है। हमारे चेतन के भीतर जो उथल-पुथल मच जाती है, वही बाहर हमारे संकेतों, प्रतीकों में प्रकट होती है।

काव्य में प्रतीकों का प्रयोग नयी अभिव्यंजना शक्ति, अर्थ सौष्ठव और लाक्षणिक विशिष्टता लाने के लिए किया जाता है - डॉ॰भगीरथ मिश्र के शब्दों में - "अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृष्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत भाव, वस्तु भाव, विचार क्रिया-कलाप, देश जाति-संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।"[14]

प्रयोगवादी कविता में शिल्प का प्रयोग अधिक है। अतः नवीन प्रतीकों का प्रयोग नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है। सामान्यतः प्रतीकों को लोक-जीवन से ही लिया जाता है। लेकिन नये कवियों ने नये भावों की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य की अपेक्षा विशेष प्रतीकों का उपयोग किया है, जिसमें अर्थ की प्रतीति में बाधा पड़ती है।

कवि रघुवीर सहाय ने अपनी कविता में ऐसे कितने प्रतीकों का प्रयोग किया है, जो अपने सहज एवं वास्तविक अर्थ को खोकर केवल एक निर्दिष्ट अर्थ

की प्रतीति कराने में सर्वथा समर्थ जान पडते हैं। इन प्रतीकों में नवीनता के साथ-साथ विविधता है, मार्मिकता के साथ-साथ स्वाभाविकता है और भौतिकता के साथ-साथ अध्यात्मिकता भी है। इन प्रतीकों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम वर्ग में वे प्रतीक आते हैं, जिनका सम्बन्ध कवि के जीवन से है। जैसे "हारिल" पक्षी कवि की दुर्दम सर्जनेच्छा का प्रतीक है। "नन्हीं शिखा" वासना का प्रतीक है और "हरी घास" व्यापक जीवन का प्रतीक है।

रघुवीर सहाय का काव्य जनकाव्य है। उसमें सीधी भाषा शैली को अपनाया है। किन्तु ये सीधे-सरल और व्यावहारिक शब्द ही अनेक बार प्रतीक बनकर आये हैं। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि एक सफल व्यंग्यकार होने के नाते रघुवीर सहाय के काव्य में प्रतीक अपनी अनिवार्यता लेकर आये हैं। प्रतीकों के सहारे यह कवि अपनी अभिष्ट भाव की व्यंजना कर सकने में सफल हुआ है।

रघुवीर सहाय ने प्रतीकों में सम-सामायिक समस्याएँ नेताओं और आंतर्राष्ट्रीय व्यक्तियों आदि पर करारे व्यंग्य किए हैं। इन सभी के लिए उन्होंने प्रतीकों का सहारा लिया है। इनमें अर्थ-भार वहन करने की अद्‌भूत क्षमता है। प्रेषणीयता का विलक्षण गुण है और यह प्रतीक ही है कि जो कवि के अभिप्रेत को मनोरंजक और प्रभावी शैली में व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं।

रघुवीरजी ने कायरता को प्रतीक बनाकर उन्होंने अपनी आंतरिक पराजय का चित्रण किया है। अव्यवस्था और असफलता के समक्ष व्यक्ति निराश होकर बैठ जाता है। पराजित व्यक्ति की मनःस्थिति को रघुवीर ने यहाँ स्पष्ट किया है। व्यक्ति के इस आंतरिक द्वंद्वऔर टूटन को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

"मैं अभी आया हूँ सारा देश घूम कर
पर उसका वर्णन दरबार में करूंगा नहीं
राजा ने जनता को बरसों से देखा नहीं
यह राजा जनता की कमजोरियाँ जान न सके इसलिए मैं
जनता के क्लेश का वर्णन करूंगा नहीं इस दरबार में।"[15]

व्यक्तिगत प्रतीक याने जिनका सम्बन्ध कवि की निजी अनुभूति और प्रेरणा से रहता है। रघुवीरजी की काव्य में वैयक्तिक भावना पूर्ण रूप से विकसित हो गयी है -

जैसे - पानी, सूखा, सब्जा, पिचकी थाली आदि ऐसे ही व्यक्तिगत प्रतीक हैं। जिनको अपनाकर कवि ने अपनी अभिव्यक्ति को आकर्षक बनाया है। जैसे -

"जो पानी के मालिक हैं
भारत पर उनका कब्जा है
जहाँ न दें पानी वाँ सूखा
जहाँ दे वहाँ सब्जा है।"[16]

दूसरा उदाहरण -

"लाश वह चीज है जो संघर्ष के बाद बच रहती है
उसमें सहेजी हुई रहती है : एक पिचकी थाली
एक चीकट कंघी और देह के अन्दर की टूट
सिर्फ एक चीख बाहर आती है जो कि दरअसल
एक अन्दरूनी मामला है और अभी शोध का विषय है।"[17]

प्रतीक धर्म और संस्कृति से गृहित किए जाते हैं, उसे सांस्कृतिक प्रतीक कहलाते हैं। रघुवीर सहाय ने सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग भी बड़ी सफलता एवं सजीवता के साथ किया है। जैसे -

(अ) "उपरी आमदनी की ऊब
जोडकर हाथ काढकर खीस
खड़ा है बुढ़ा रामगुलाम
सामने आकर के हो गए
प्रतिष्ठित पंडित राजाराम।"[18]

(आ) "हाँकता अन्धड़ अन्धा बाप गोद में मुँह खोले -
हाँफता बच्चा
दिखलाकर उसने दोहत्थड दिमाग पर मारा दिल -
दहलाकर
तिलमिलाकर मैंने हाथ जेब में डाला निकली अठन्नी
नहीं दी
वह बहुत थी।"[19]

पौराणिक प्रतीक पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं। कवि रघुवीर सहाय ने प्रतीकों का प्रयोग करके अपनी कविता को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने का सुंदर प्रयास किया है। देवताओं के नाम का प्रयोग करके कवि ने पौराणिक प्रतीकों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया है। जैसे -

"आँखे फाडे सुकुल यह रहस्य देखता
उत्तर दक्षिण के 36 भये देवता
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस भारत की एकता।" [20]

प्रयोगवादी कवियों ने सौन्दर्य-चित्रण, रूप योजना और नयी कल्पनाओं के आयोजन में प्रकृति वर्ग के प्रतीकों का प्रयोग किया है।

कवि रघुवीर सहाय ने मस्ती के आठ दिनों का वर्णन करते समय प्राकृतिक प्रतीक का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उदा -

"गोवा भी जायेंगे
सन्त जेवियर देखें
श्रीलंका जायेंगे
बौद्ध मंदिर देखें
मत भूले भारत के सर्वप्रथम जलविहार के इस आयोजन में
आप चुने चुने बड़े लोगों के साथ होंगे

हालाँकि खर्च ऐश्वर्य के आठ दिनों के बदले
ऐसा कुछ बहुत नहीं।"[21]

कवि रघुवीर सहाय ने अपनी व्याकुलता को स्पष्ट रूप से न कहकर प्राकृतिक उपादानों का सहारा लेकर व्यक्त किया हैं। देखिए -

"दौड़े जाते हैं डरे लदेफदे भारतीय
रेलगाडी की तरफ
थकी हुयी औरत के बडे दाँत
बाहर गिराते हैं उसकी बची-खुची शक्ति
उसकी बच्ची अभी तीस साल तक
अधड़ होने तक तीसरे दर्जे में
मातृभूमि के सम्मान का सामान ढोती हुई
जगह ढूंढती रहे
चश्मा लगाए हुए एक सिलाई-मशीन
कन्धे उठाये हुए।"[22]

विज्ञान की नयी-नयी खोजों से सिर्फ मानव ही नहीं तो कवि, लेखक भी प्रभावित हो गये हैं। रघुवीर सहाय के काव्य में वैज्ञानिक प्रतीक दिखाई देते हैं। उन्होंने यथार्थता को दिखाने के लिए वैज्ञानिक प्रतीकों का आश्रय लिया है।

रघुवीर सहाय की "टेलिविज़न" कविता स्पष्टतः प्रतीकों पर आधारित है। जैसे -

"हर इतवार दिखाता है वह बंबइया पैसे का खेल
गुंडागर्दी औ" नामर्दी का जिसमें होता है मेल
कभी कभी वह दिखला देता है भूखा नंगा इन्सान
उसके उपर बजा दिया करता है सारंगी का तान।"[23]

बिम्ब-विधान

हिन्दी में, काव्य-बिम्ब की अवधारणा, प्रतीक की भाँति मूलतः आधुनिक की अपनी देन है। आधुनिक चिंतन में प्रयुक्त शब्द "बिम्ब" अंग्रेजी के "इमेज" का पर्याय है। हिन्दी का बिम्ब विवेचन भी आधुनिक पश्चिमी-काव्यशास्त्र के बिम्ब विवेचन से प्रभावित है। किन्तु हिन्दी में बिम्ब विवेचन के दो पक्ष है - 1· बिम्ब प्रक्रिया के अधिक से अधिक वर्गीकरण और, 2· भारतीय काव्यशास्त्र में बिम्ब परंपरा की खोज। इनके अतिरिक्त नये कवियों ने एक अन्य पक्ष भी प्रस्तुत किया है। वह है शिल्प के तत्व के रूप में बिम्ब का महत्व प्रतिपादित करना।"

नई कविता में बिम्ब-विधान-सम्बन्धी जो नाविन्य है उसका एकमात्र कारण नये कवि का परिवर्तित दृष्टिकोण है। बिम्ब संयोजन में नये कवि पारम्परिकता का अनुगमन नहीं करते अपितु, कविता में नूतन बिम्बों की उद्भावना करते हुए उनके मौलिक संस्कारों को व्यंजित करते हैं। इन रचनाकारों की जीवन-दृष्टि भिन्न है, उनकी काव्य-सम्बन्धी मान्यताएँ भी अलग है और उन्होंने मौलिक काव्य-सिद्धान्तों की स्थापना की है।"[24]

बिम्ब कविता का प्राणतत्व है। इसका निर्माण कल्पना के सहयोग से होता है। वस्तुतः बिम्ब कल्पना और स्मृति की वह क्रिया है जो शब्दों के द्वारा चित्र प्रस्तुत करती है। कई बार तो बिम्ब सीधी, सरल शब्दावली द्वारा खड़े किए जाते हैं। तथा कई बार अलंकृति द्वारा किन्तु सर्वाधिक सफल बिम्ब वे होते हैं जो ऐन्द्रिय संवेदनाओं द्वारा खडे किए जाते हैं। बिम्ब एक ऐसा शब्दचित्र है जिसमें अलंकृति स्पर्श भी होता है और भावावेगमयी कल्पना का भी। रघुवीर सहाय के बिम्बों में ताजगी है, सरलता है, चुटीलापन है और कहीं-कहीं वे स्मृति के सहारे खडे किए जाते हैं।

डॉ·आदित्य प्रसाद तिवारी बिम्बात्मक भाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - "सामाजिक के चित्र को अनुगुंजित करनेवाली बिम्बात्मक भाषा ही काव्य की अनुभूति-प्रवण संप्रेषणीय और जानदार बनाती है। सपाट बयानी

भाषा काव्य के लिए असरदार साबित नहीं होती। जो कवि जितना कल्पना-प्रवण और अनुभव संपन्न होता है प्रभावशाली बिम्बों की योजना में वह उतना ही कामयाब होता है। बिम्ब कवि के यथार्थ बोध और उसकी समसामायिक चेतना के वाहक होते हैं। रघुवीर सहाय बिम्ब-संयोजन, विविध रूपी और बहुआयामी है। प्रतिकात्मक और मुहावरा-परक बिम्बों के निर्माण में वे विशेष रमे हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों से भी वे अपने बिम्ब संयोजित कर लेते हैं।"-25

रघुवीर सहाय एक सिद्धहस्त कवि है और उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को अधिकाधिक मार्मिक एवं मनोरंजक बनाने के लिए जहाँ विविध प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है। वहाँ अपनी उक्तियों को गुरूता, गंभीरता, कमनीयता, अलौकिकता एवं मधुरता प्रदान करने के लिए विविध प्रकार के बिम्बों का प्रयोग अत्यन्त सफलता एवं सजीवता के साथ किया है, वस्तुतः बिम्बों के क्षेत्र में रघुवीर सहाय अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

ऐंद्रिय बिम्ब -

इसके अंतर्गत कवि ने बिम्बों का प्रयोग बड़ी सफलता से किया है।

दृश्य बिम्ब

कवि रघुवीर सहाय ने देखा कि एक औरत कितनी सच्ची है। जिससे ही पुरूषों का निर्माण होता है ऐसी औरत को पुरूषों से ही बचकर रहना पड़ता है। आज उसका पति होने के कारण ही वह सुरक्षित है। यहाँ कवि ने बिम्ब को स्पष्ट करते हुए कहा है -

"कितनी सचमुच है यह स्त्री
कि एक बार इसके सारे बदन का एक व्यक्ति बन गया है
उसके बाल अब घने काले नहीं
दुख उसे केशों का नहीं है
वह उदास नहीं डरी हुई है अधेड है औरत है
सुन्दर है।" 26

दृश्य बिम्ब के अन्तर्गत यह उदा· देखिए -

"वह लडकी भीख माँगती थी दबी ढँकी
एकाएक दूसरी भिखारिन को वहाँ देख
वह उस पर झपटी
इतनी थोडी देर को विनय
इतनी थोडीदेर को क्रोध
जर्जर कर रहा है उसके शरीर को।" [27]

वस्तुपरक बिम्ब

इन बिम्बों के अंतर्गत कवि ने मानव और प्रकृति सम्बन्धी विविध प्रकार के बिम्बों का विधान किया है। वस्तुपरक बिम्ब के विविध प्रकार होते हैं। सर्वप्रथम उन्हें दो भागों में विभाजित किया जाता है - मानव संबंधी और प्रकृति संबंधी। मानव संबंधी बिम्बों के अंतर्गत रूप सौंदर्यगत बिम्ब, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक, व्यावसायिक, यौन संबंधी, वैज्ञानिक आदि प्रकृति संबंधी बिम्बों में जड़ प्रकृति संबंधी, चेतन, प्रतिकात्मक आदि आते हैं।

अ· राजनीतिक बिम्ब

1· "एक मंत्री भीड़ के बीच खोया सा सहसा मिल गया मुझे
देखते ही बोला - अच्छे हो।
मैंने कहा - हुजूर ने पहचाना।
तब कहने लगा जैसे यही पहचान हो
तुम अभी संकट से मुक्त नहीं हुए हो
फिर जैसे शक हो गया हो कि भूल की -
क्षण भर घूरा मुझे
बोला - कल मेरे पास आना तब बाकी बताऊंगा।" [28]

2· "यह समाज मर रहा है इसका मरना पहचानो मन्त्री
देश ही सब कुछ है धरती का क्षेत्रफल सब कुछ है
सिकुडकर सिंहासन भर रह जाये तो भी वह सब कुछ है
राजा ने मन में कहा जो राजा प्रजा की दुर्बलता नहीं
पहचानता।"[29]

ब· सांस्कृतिक बिम्ब

सांस्कृतिक बिम्ब अपनी निजी विशेषता रखते हैं। इनमें किसी व्यापार को स्पष्ट करने के लिए सांस्कृतिक क्रिया-कलापों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। इन सांस्कृतिक बिम्बों का प्रभाव बड़ा ही पावन और उदात्त होता है। ये प्रसन्न बिम्ब एक स्वस्थ वातावरण प्रस्तुत करते हैं। उदा·के लिए रघुवीर सहाय की पंक्तियाँ देखिए -

"धीरे-धीरे
किसी मन्दिर की सीढ़ियों से बहाया हुआ,
भोले पानी पे तैरता चला आया, उषा की दीपक,
पूर्व में भीड़ सितारों की लगी दबने।"[30]

क· सामाजिक बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्यों में सामाजिक बिम्बों का भी प्रयोग हुआ है। सामाजिक बिम्ब अपनी निजी विशेषता रखते हैं। इसमें समाज की क्रियाकलापों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। रघुवीर सहाय के काव्य में सामाजिक बिम्ब इसप्रकार-

1· "वह खड़ी थी
दुबली और थकी
और मुझे लगा कि वह खड़ी ही रहेगी
क्योंकि ऐसे ही वह पूर्ण होती है।"[31]

2· "वे माँग जिस समय भरती थी
तब कितना धीरज धरती थी
वे सब दुपहर में एक किले पर
पहरा देती सोती थी
वे ठिगनी थीं वे दुबली थीं
वे लम्बी थीं वे गोरी थीं
वे कभी सोचती थीं चुपचाप न जाने क्या
वे कभी सिसकती थीं अपने सब के आगे।" [32]

प्राकृतिक बिम्ब

इसके अंतर्गत प्रकृति के विभिन्न उपकरणों का सौंदर्य प्रस्तुत किया जाता है। रघुवीर सहाय के काव्य में प्राकृतिक बिम्ब देखिए -

"देखो वृक्ष को देखो वह कुछ कर रहा है
किताबी होगा कवि जो कहेगा कि हाय पत्ता झर रहा है
रूखे मुँह से रचता है वृक्ष जब वह सूखे पत्ता गिराता है
ऐसे ही ठीक जगह जाकर गिरें धूप में छांह में।" [33]

भाव बिम्ब के भी अनेक प्रकार होते हैं। इस बिम्ब में दृष्य पक्ष उतना स्पष्ट नहीं होता है जितना कि भावपक्ष। अपने गढ़न और गुणों के आधार पर भाव बिम्ब एक तरह से धुंधला और अनुभूति या संवेदना-प्रधान होता है। इसमें सुख-दुःख, आशा-निराशा, विरह-मिलन का भावात्मक चित्र उपस्थित किया जाता है। रघुवीर सहाय के काव्य में इस प्रकार के बिम्ब पाये जाते हैं। उदा· -

वेदना का बिम्ब -

"मैंने जमा कीं
नौ जवान
या दस बेबस लड़कियाँ

और उन्हें चिपके कपड़े पहना दिये
फिर मैं रोया उनके स्तनों की असली शक्ल देखकर।"[34]

इसप्रकार शुद्ध बिम्बोवालों का प्रयोग किया जाता है। जिसके अंतर्गत सेवा, लालसा, अभिलाषा, उदासी, प्रेरणा से संबंधी बिम्ब आते हैं। कवि रघुवीर सहाय ने भावोबिम्बों का प्रयोग करके अपनी कविताओं को सरस बनाया है।

आकांक्षा, लालसा, दंभ और प्रेरणा के बिम्ब -

1. "दिल्ली के वसन्त का वह एक विशेष दिन था
गरमी थी और हवा थी जो धूप को उड़ाये लिए जाती है
मौलसिरी के बड़े से पेड़ तले छाँह का छितरा हुआ घेरा था
सामने लहराते एक हजार फूलों के रंग से डरकर
सिमटे हुए लोग उसमें बैठे थे
मृत्यु की खबर की प्रतीक्षा में।"[35]

रघुवीर सहाय ने व्यक्ति स्वप्न में अपने असंबद्ध विचारों या तारतम्यहीन दमित इच्छाओं को अभिव्यक्त किया है। रघुवीर सहाय की "शराब के बाद का सबेरा" कविता का निम्नलिखित उदा॰देखिए -

2. "शराब के बाद का सबेरा
न मालूम कहाँ होंगी कुतरी हुई किताब की खुशियाँ
भूले हुए डर के याद आने पर न मालूम कहाँ होगी
रोज के बार-आर आने की ढुहरी हुई तस्वीर में
एक खंडहर है।
किसी ने हरी सारी सूखने को टांग दी है।"[36]

इसप्रकार रघुवीर सहाय के काव्य में बिम्ब मिलते हैं। और इसका प्रधान कारण है कवि की रोमनी दृष्टि। रघुवीर सहाय के बिम्ब भाषा को अपूर्व शक्ति और व्यंजकता प्रदान करते हैं।

जनभाषा का प्रयोग

नये कवि ने जहाँ अपनी अभिव्यक्ति के लिए असमर्थ पुरानी काव्यभाषा को त्याज्य माना है वहाँ प्रारम्भ से ही अपने लिए एक उपयुक्त भाषा की खोज भी की है। इसी खोज में पाया कि काव्य की भाषा सहज व्यवहार और आम जन-जीवन की भाषा चाहिए।

नया कवि काव्य-भाषा में आँचलिक बोलियों के शब्दों का समावेश भी स्वीकार करता है। यूं भी हिन्दी - खड़ी बोली, मेरठ-दिल्ली अंचल की भाषा होते हुए भी दूसरे अनेक अंचलों की सेवा प्राप्त किए हुए हैं।

रघुवीर सहाय ने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है, परंतु उन्होंने बोलचाल को बिम्ब में संक्रामित किया है। उनकी कविता बोलचाल के शब्दों में गुंथी हुई होने पर भी अभिधा की कविता नहीं है।[37]

सज्जाहीन, संस्कारहीन जनभाषा ही आज भी कविता की भाषा है। क्योंकि तत्कालीन स्थितियों का चित्रण परम्परागत भाषा में संभव नहीं था। आज की कविता जिस भयावह स्थिति का सामना कर रही है उसके लिए बेलोस भाषा ही उपयुक्त हो सकती है। इस भाषा को इन्होंने जीवंत संसार से उपलब्ध किया जनभाषा साहित्यिक भाषा बन गई। और कविता "सामान्य शब्दों का सामान्य क्रम।" इस जनभाषा का भी एक सौन्दर्य शास्त्र है जो "जड़ सौन्दर्य शास्त्र" से स्वभावतः भिन्न है। इन कवियों का लक्ष्य भाषा की सिद्धि नहीं है।

कवि अपने परिवेश से जुड़ा रहता है। समूचे संदर्भ इसी समाज से उसे मिलते हैं। इसी मिट्टी की गंध सामान्य जनता की शब्दावली के माध्यम से मुखरित होना स्वाभाविक ही है। रघुवीर सहाय ने "जीवन की भाषा का प्रयोग किया है। "आत्महत्या के विरूद्ध", "आमार सोनार दिल्ली", "चेहरा" आदि कविता में जनभाषा का प्रयोग बहुत हुआ है। जैसे -

"क्या दो बार लिख सकते हैं कि याद
आती है ?"
"एक बार मामी की एक बार मामा की ?"
"नहीं, दोनों बार मामी की"
"लिख सकती हो जरूर बेटी", मैंने कहा
समय आ गया है।" [38]

"आमार सोनार दिल्ली" कविता में रघुवीर सहाय ने जनभाषा का प्रयोग किया है। उदा·

"आमार सोनार दिल्ली में मक्खन का
विज्ञापन
जिस दिन
तफ़रीहन आदतन खाने वाले
बच्चों के लिए छपता है
उसी दिन
उसी समय
क्या तुम उसकी नृशंसता देख सकतो हो ?" [39]

तो "चेहरा" कविता में असल जनभाषा दिखायी देती है। देखिए -

"सब जाने पहचाने चेहरे
जाने कितनी जल्दी में हैं
कतराते है मुड़ जाते हैं
नौजवान हँसता है कह कर
ठीक सामने "तो मेरा क्या"।" [40]

उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में असल जनभाषा का प्रयोग हुआ है। इसी तरह अपने कविता में रूंद, गुपचुप, बयार, मिठास, बौदा, चरी, आँगन, डगर, गसा, बेबस, दुबक, मक्खन, चिठ्ठी, सन्नाटा, बहनें, दर्द, अस्पताल, ठीकरा, महक,

साँवली, बदली, सुरमीली आँखे, आदि बहुत सारे जनभाषीय शब्दों का प्रयोग करके सहायजी ने कविता को स्थानीय रंग से रंजित करने का सुंदर एवं सजीव प्रयत्न किया है। रघुवीर सहाय ने जीवन व्यवहार की भाषा को अपनाकर काव्य को ताजगी और नवीन शक्ति प्रदान की है।

स्पष्ट है कि यहाँ मूल आशय बोलचाल के शब्दों को अपनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि आज के जीवन की लय को, उसकी धडकन को, अपनाने का आग्रह है और उसी आग्रह के तहत बातचित की भाषा को, उसकी लय को, उसके आधार पर बदली हुई शब्दावली आदि को काव्य-भाषा के रूप में अपनाना और प्रतिष्ठित करना नये कवि की जरूरत है।

मुहावरें और लोकोक्ति का प्रयोग

लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग रघुवीर सहाय के काव्य में पर्याप्त दिखायी देता है। कवि के द्वारा लोकोक्ति और मुहावरों के प्रयोग में बिल्कुल मौलिकता है। वास्तव में कवि ने अभिजात्य काव्यभाषा को तोड़कर सड़क की भाषा और आम मुहावरे के प्रयोग द्वारा पारम्परिक भाषा प्रतिमान को एक नया सौन्दर्यशास्त्र रचा है।

लोकोक्ति एवं मुहावरें भाषा के प्राण होते हैं, इनसे न केवल भाषा में अर्थ-गौरव की सृष्टि होती है, अपितु इनसे उक्ति-वैचित्र्य का चमत्कार भी उत्पन्न होता है तथा इनसे कथन में प्रभावोत्पादकता आ जाती है। कविवर रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं में लोकोक्ति एवं मुहावरों द्वारा विलक्षण उक्ति-चमत्कार एवं अर्थ-सौष्ठव की सृष्टि की है।

रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में नये मुहावरें और लोकोक्ति के साथ-साथ पुराने मुहावरों और लोकोक्ति का प्रयोग भी किया है। उनके नये मुहावरें में भावों का स्पंदन है, हृदय की धड़कन है और नये शिल्प की भंगिमा है। जैसे, संकट से गुजरना, टकटकी बाँधना, आँखे मिलाना, परास्त होना, घूँट पीना, मिट्टी

से मिट्टी मिल जाना, जाँघ ठोकना, चेहरा सफेद पड़ना, मुँह फाड़ना, तन से सहना, पाँव-तले रौंदना, तय करना, सीने पर धरना, आँसू पीना, तिल-तिल खिसकना, चौपट करना आदि।

अ· "जब एक महान संकट से गुज़र रहे हों
पढ़े लिखे जीवित लोग
एक अधमरी अपढ़ जाति के संकट को दिशा देते हुए।"[41]

आ· "कहीं से लाओ निर्धनता
जो अपने बदले में कुछ नहीं माँगती
और उसे एक बार आँख से आँख मिलाने दो।"[42]

इ· "हँसते-हँसते किसी को जानने मत दो किस पर हँसते हो
सबको मानने दो कि तुम सब की तरह परास्त होकर
एक अपनापे की हँसी हँसते हो
जैसे सब हँसते हैं बोलने के बजाय।"[43]

ई· "पहले भारत में सामुहिक हास परिहास तो नहीं ही था
लोग आँख से आँख मिला हँसते थे
इसमें सब लोग बायें-दायें झाँकते हैं
और यह मुँह फाड़कर हँसी जाती है।"[44]

उ· "कुछ पता चला जान का शोर डर कोई लगा
नहीं - बोला मेरा भाई मुझे पाँव-तले
रौंदकर, अंग्रेजी।"[45]

जैसे मज़ाक बनकर रह जाना, ठंडी साँसों का रह रहकर निकालना, सूनी साँस का सनसनाना, भूख की मनहूस छाया होना, कठिनाइयों का सामना करना, दमन करना, अपना दिल उधार देना, ऊँचा सिर न झुकाना, कोमल भावों का मूल्य

होना, भावों का पथराना, प्यार के चाँद का बुझ जाना, अपनी साध पूरी करना, बेजान मिट्टी का झूमना, हृदय का बरफ बन जाना, किसी की याद सताना, तिल-तिल कर मिट जाना, जीवन से ढडकर युद्ध करना आदि।

परामर्श

इस प्रकार शिल्पविधान की प्रौढता की दृष्टि से रघुवीर सहायजी का काव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रघुवीर सहायजी ने नूतन युग के अनुरूप जिस काव्यात्मक भाषा को स्वीकार किया वह वैसी रही जिसने आधुनिक मानव जीवन की संवेदना को ग्रहन करते हुए मानवता की प्रतिष्ठा की। रघुवीर सहाय के भाव और विचार पक्ष की तरह कला और शिल्प भी विकासशील है। रघुवीर सहाय के काव्य में प्रतिकों की विशेषता है उन्होंने प्रतिकों के नवनिर्माण द्वारा उनके काव्य की शोभा बढ़ायी है। रघुवीर सहाय ने बिम्ब विधान के अन्तर्गत अनेक वस्तुओं के रूप, गंध, ध्वनि आदि का सजीव अंकन किया है। इसके साथ ही जनभाषा का यथार्थ प्रयोग, मुहावरें लोकोक्ति द्वारा नये शब्दों का निर्माण करके अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है, जिससे इनके काव्य की प्रभावोत्पादकता बढ़ गयी है। काव्य के शिल्प पक्ष अंतर्गत भाषा, प्रतीक, बिम्ब, जनभाषा का प्रयोग, मुहावरे और लोकोक्ति इन समस्त रूपों में रघुवीर सहाय नवीन संदर्भों की खोज करता हुआ सफलता प्राप्त करता है। अतः मैंने रघुवीर सहाय के काव्य शिल्प को इसी प्रकार चित्रित किया है।

संदर्भ-सूची

1· नये कवियों के काव्य-शिल्प सिद्धान्त, दिविक रमेश, पराग प्रकाशन, 3/114, कर्णगली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32, प्र·सं·1991, पृ·2

2· नया काव्य नये मूल्य, ललित शुक्ल, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि·, दिल्ली, प्र·सं·1975, पृ·289

3· वही, पृ·56

4· नये कवियों के काव्य-शिल्प सिद्धान्त, दिविक रमेश, पराग प्रकाशन, 3/114, कर्णगली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32, प्र·सं·1991, पृ·16

5· वही, पृ·96

6· आत्महत्या के विरुद्ध, रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, प्रा·लि·, 8,नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली - 110 002, प्र·सं·1967, पृ·87

7· वही, पृ·34

8· काव्य परम्परा और नयी कविता की भूमिका - कमल कुमार, प्रेम प्रकाशन मन्दिर, 3012, बल्लीमारान, दिल्ली - 110 006, प्र·सं·1988, पृ·40

9· आत्महत्या के विरुद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8,नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·23

10· वही, पृ·

11· हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ·शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली - 6, तेरहवाँ संस्करण 1992, पृ·509

12· हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - डॉ·द्वारकाप्रसादा सक्सैना, विनोद पुस्तक मन्दिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2, अष्टम् संस्करण 1990, पृ·438

13· आधुनिक कविता की प्रवृत्तियाँ - डॉ·गौतम प्रेमप्रकाश, सरस्वती पुस्तक सदन, आग्रा, प्र·सं·1972, पृ·135

14 काव्यशास्त्र - डॉ·भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी-221 001, एकादश संस्करण 1994, पृ·294

15 हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नयी दिल्ली - 110 002, द्वि·सं·1979, पृ·3

16· वही, पृ·5

17· वही, पृ·7

18· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·, 8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·15

19· वही, पृ·70

20· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23,दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002, द्वि·सं·1979, पृ·37

21· वही, पृ·61

22· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·, 8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·80

23· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23,दरियागंज, नयी दिल्ली-110 002, द्वि·सं·1979, पृ·47

24· नयी कविता : कथ्य एवं विमर्श - डॉ·अरूणकुमार, पृ·300, चित्रलेखा प्रकाशन, 170 आलोपी बाग, इलाहाबाद - 211 006, प्र·सं·1988,

25· कविता के आसपास - मूलचन्द सेठिया, पृ·110, श्याम प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर - 302 003, प्र·सं·1992

26· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23,दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002, दि·सं·1979

27· वही, पृ·69

28· वही, पृ·9

29· वही, पृ·75

30· सीढ़ियों पर धूप में - रघुवीर सहाय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, प्र·सं·1960, पृ·

31· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·, 8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·44

32· हँसो-हँसो जल्दी - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002, दि·सं·1979, पृ·22

33· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967

34· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, दि·सं·1979,पृ·43

35· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·37

36· वही, पृ·55

37· कविता के आसपास - मूलचन्द्र सेठिया, श्याम प्रकाशन, फिल्म कालोनी,जयपुर-302 003 प्र·सं·1992, पृ·120

38· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·29

39· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23,दरियागंज नई दिल्ली-110 002, दि·सं·1979, पृ·62

40· वही, पृ·64

41· वही, पृ·8

42· वही, पृ·10

43· वही, पृ·25

44· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110 002, प्र·सं·1967, पृ·16

45· वही, पृ·24